62

फसह

(26:17–29)

कालक्रम चाहे पूरी तरह स्पष्ट नहीं है परन्तु स्पष्टतया फसह को मनाने की तैयारियां गुरुवार को ही हुईं (26:17–19)। फसह का मनाया जाना और प्रभु भोज की स्थापना उसी शाम हुए। दिन की यहूदी गणना के ढंग से (6:00 अप्रान्त से 6:00 अप्रान्त) यह शुक्रवार का दिन था (26:20–29)।

तैयारी (26:17-19)

[17]अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के पहिले दिन, चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे; तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिए फसह खाने की तैयारी करें ? [18]उस ने कहा, नगर में फुलाने के पास जाकर उस से कहो, कि गुरु कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहां पर्ब्ब मनाऊंगा। [19]सो चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया।

आयत 17. फसह परमेश्वर के इस्राएलियों के मिस्र की दासता से छुड़ाने को याद करने के लिए एक यहूदी जश्न था। मिस्र में पहलौठों को मारने के समय परमेश्वर इस्राएलियों के घरों से, जिनके दरवाजों पर मेमने का लहू लगा हुआ था ''ऊपर से गुजर'' गया (निर्गमन 12:13, 23, 27)। फसह एक रात की घटना थी, जिसके बाद सात दिनों तक अखमीरी रोटी खाई जाती थी। ''अखमीरी रोटी का पर्व'' नाम इस पूरे समय को दिया गया था (निर्गमन 12:15–20; लैव्यव्यवस्था 23:4–8; गिनती 28:16–25; व्यवस्थाविवरण 16:1–8)। फसह **अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन** खाया जाता था इस कारण ''अखमीरी रोटी'' और ''फसह'' नामों का इस्तेमाल आम तौर पर एक-दूसरे के स्थान पर किया जाता था (मरकुस 14:1, 12; लूका 22:7)।

फसह का आधिकारिक समारोह यहूदियों के अबीब या निसान की चौदह तारीख को होता था। व्यवस्था के अनुसार फसह का मेमना महीने के दसवें दिन चुना जाना होता था। मेमना महीने के चौदहवें दिन तक घर में रखा जाता था और फिर बलि किया जाता था (निर्गमन 12:2–6)। इसे ''धुंधली रौशनी'' में काटा जाना होता था जो ऐसा शब्द है जिसका मूल अर्थ ''दो शामों के बीच में।'' यह अभिव्यक्ति सम्भवतया सूर्यास्त और अंधेरे के बीच के समय का संकेत है।

नये नियम के समय तक फसह के मेमने नौंवे और ग्यारवें घण्टे (3:00 और 5:00 बजे शाम) के बीच काटे जाते थे।[1] पर्व के लिए यरूशलेम में हजारों यात्री आते थे जिस कारण मन्दिर में फसह के मेमनों का काटा जाना तीन बड़ी-बड़ी शिफ्टों में होता था। अपने जानवरों को काटने की जिम्मेदारी लोगों की होती थी। वे उनकी खाल उतारने के लिए उन्हें दीवारों पर लगे कीलों

या खम्भों पर टांग देते थे। याजक कतार में खड़े होकर मेमनों में से निकाले गए लहू के कटोरे भरकर आगे दे देते थे। वेदी के बिल्कुल पास वाला याजक वेदी के नीचे उस लहू को उण्डेल देता था। लोग जानवरों के बलिदान किए गए भागों को हटाकर याजकों को देते थे, जो उन्हें वेदी पर जला देते। बचे हुए मेमने को घर ले जाया जाता; उसका मांस मिट्टी के तंदूर में लकड़ी की सीख पर भूना जाता और फिर फसह के भोज में खाया जाता।[2]

आयत 18. प्रेरितों के इस प्रश्न के उत्तर में कि वह फसह कहां मनाएं, यीशु ने उनमें से दो को कहा कि **यरूशलेम जाकर फुलाने व्यक्ति को मिलो।** उन्होंने उसे पानी का मटका उठाकर ले जाते हुए देखना था (मरकुस 14:13; लूका 22:10)। उन्होंने उसे आसानी से पहचान लेना था, क्योंकि पानी ले जाने का जिम्मा आम तौर पर स्त्रियों का होता था। चेलों ने उस व्यक्ति के पीछे-पीछे उसके घर चले जाना था और उसे दोहरा उपदेश देना था।

संदेश का पहला भाग "**मेरा समय निकट है**" यीशु की निकट मृत्यु का संकेत था। फसह की तैयारियां गुरुवार को हो गई थीं और अगले दिन यीशु ने क्रूस पर चढ़ाए जाना था। यूहन्ना रचित सुसमाचार में आमतौर पर ऐसी ही भाषा मिलती है। "समय" (*kairos*) की जगह यूहन्ना में कहीं कहीं "घड़ी" (*hōra*) है (यूहन्ना 2:4; 7:30; 8:20; 12:23; 13:1; 17:1; देखें मत्ती 26:45)।

संदेश का दूसरा भाग था "**मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहां पर्व मनाऊंगा।**" चेलों ने उस आदमी से पूछना था, "वह पाहुनशाला कहां है जिस में मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊं?" (लूका 22:11) और उन्हें "एक सजी सजाई बड़ी अटारी" दिखाई जानी थी जहां उन्होंने फसह का भोज तैयार करना था (लूका 22:12)। यरूशलेम में रहने वाले लोग आमतौर पर दूसरे यहूदी परिवारों को जो फसह को मनाने आते थे, अपना अतिरिक्त स्थान दे देते थे। यीशु का अपने आपको गुरु कहना यह सुझाव देता है कि यह व्यक्ति एक चेला था।

आयत 19. चेलों ने जब प्रभु के कहने के अनुसार किया तो उन्हें बिल्कुल वैसा ही मिला जैसे उन्हें बताया गया था। तब उन्होंने **फसह तैयार किया।** मेमना बलिदान करने और भूनने के अलावा चेलों ने अखमीरी रोटी, दाखरस, कड़वी भाजी और करोसेत (फल और पिसी हुई गिरी की चटनी) भी खरीदी होगी।

पकड़वाने वाले की घोषणा (26:20-25)

[20]जब सांझ हुई, तो वह बारहों के साथ भोजन करने के लिए बैठा। [21]जब वे खा रहे थे, तो उस ने कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा। [22]इस पर वे बहुत उदास हुए, और हर एक उस से पूछने लगा, हे गुरु, क्या वह मैं हूं? [23]उस ने उत्तर दिया, कि जिस ने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा। [24]मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य के लिए शोक है जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है: यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिए भला होता। [25]तब उसके पकड़वाने वाले यहूदा ने कहा कि हे रब्बी, क्या वह मैं हूं?

आयत 20. 26:20-25 की इस बातचीत को **सांझ हो गई थी और यीशु बारहों के साथ**

फसह का भोजन कर रहा था। इन घमण्डी मनों को दीनता का पाठ पढ़ाने के लिए यहूदा सहित वह उन सबके पांव धो चुका था (यूहन्ना 13:3–11)।[3] उस समय की प्रथा का पालन करते हुए प्रभु और उसके प्रेरित मेज़ पर नहीं बैठे होंगे, जैसा कि प्रभु भोज की लियोनार्डो दा विंसी की प्रसिद्ध तस्वीर में दिखाया गया है। इसके बजाय वे छोटी मेज के आसपास लगे तकियों पर झुके (*anakeimai*) होंगे।

आरम्भ में फसह का मनाया जाना खड़े होकर होता था। यहोवा ने इस्राएलियों को निर्देश दिया था कि "वे कमर बान्धे, पांव में जूती पहिने, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाएं" (निर्गमन 12:11)। उन्हें यह मानते हुए कि परमेश्वर उन्हें शीघ्र ही कूच में मिस्र से निकाल लेगा, यह मुद्रा बननी थी। परन्तु यीशु के समय में फसह विशेषकर झुके हुए खाया जाता था।

यूनानी और रोमी संस्कृति से प्रभावित यहूदी लोग आमतौर पर *triclinium* का इस्तेमाल करते थे। खाना खाने का यह प्रबन्ध U के आकार वाले गद्देदार पलंग को दिखाता था। इसके तीन किनारे कमरे तक होते थे। खाने के लिए बीच में एक छोटा मेज रखा जाता था। अतिथि एक ओर या पेट की ओर झुके होते थे, जिसमें उनके पांव मेज से दूर रहें। वे अपनी बाईं भुजा पर टेल लगाते हुए दायें हाथ से खाते थे। मेज़बान बीच में होता था और उसके मुख्य अतिथि उसके बाईं और दायीं ओर होते थे। यहां पर यीशु ने मेज़बान का काम किया और प्रिय चेला यूहन्ना उसकी दाहिनी ओर था (यूहन्ना 13:23)। प्राचीन जगत से *triclinium* का एक उदाहरण, 79 ईस्वी में वेसुवियुस पर फटे ज्वालामुखी की राख में रखी गई, पौंपे में मिली है।

पहली सदी तक यहूदी लोग फसह के भोज में ठहराए हुए "सेवा के क्रम" (*seder*) को मानते थे।[4] आशीष देने के बाद दाखरस का एक कटोरा दिया जाता था। इसके बाद कड़वी भाजी और अखमीरी रोटी का भाग खाया जाता था।[5] फिर दाख का दूसरा कटोरा दिया जाता था। निर्गमन 12:26 से मेल खाते हुए एक पुत्र अपने पिता से फसह के भोज का अर्थ पूछता। पिता मिस्र की दासता और निर्गमन की कहानी को इस प्रकार से बताता, जैसे उसकी अपनी कहानी हो (निर्गमन 13:8)। हलेल का पहला भाग (भजन संहिता 113; 114) खाया जाता और फिर दाख का तीसरा कटोरा डाला जाता। फिर पसकल का मेमना[6] और अखमीरी रोटी खाई जाती। इसके बाद दाख का चौथा कटोरा उण्डेला जाता और हलेल का दूसरा भाग गाया जाता (भजन संहिता 115–118)।

आयत 21. खाने के दौरान यीशु ने चेलों को बताया कि उनमें से **एक उसे पकड़वाएगा।** चेलों को अपने कानों पर विश्वास न हुआ और तुरन्त उंगली उठाना आरम्भ किया। लूका के अनुसार, "वे आपस में पूछताछ करने लगे, कि हम में से कौन है, जो यह काम करेगा" (लूका 22:23)।

आयत 22. प्रभु को पकड़वाने का विचार लगभग ऐसा ही था कि कोई चेला उसे सुन नहीं सकता था, और इस से वे **बहुत उदास हुए** (देखें 17:23; 18:31)। उनमें से हर **एक** ने यीशु से पूछा, **"हे प्रभु क्या वह मैं हूं?"** सवाल जोर देकर पूछा गया था ("सचमुच, प्रभु वह *मैं* तो नहीं हूं?") और इसमें नकारात्मक उत्तर की उम्मीद है।

आयत 23. यीशु ने उत्तर दिया, **"जिस ने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे**

पकड़वाएगा।" यह अखमीरी रोटी की गराही लेने और उसे चटनी में डुबोने वाले के लिए कहा गया लगता है।[7] उस समाज में किसी दूसरे व्यक्ति के साथ खाना मित्रता और एक होने का संकेत होता था। किसी दूसरे व्यक्ति के साथ भोजन बांटकर एक तरह से कोई यह कह रहा होता था कि "मैं तुझे हानि नहीं पहुंचाऊंगा।" यह तथ्य कि यहूदा ने यीशु के साथ खाया बल्कि उसी थाली में खा रहा था, ने उसे पकड़वाने को और भी कलंकित कर दिया। भजन लिखने वलो ने विलाप किया है, "मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था, उस ने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है" (भजन संहिता 41:9)। यूहन्ना ने इस आयत को यीशु को यहूदा द्वारा पकड़वाने में अन्त में पूरा होने के रूप में देखा (यूहन्ना 13:18)।

आयत 24. यीशु ने यह कहते हुए अपनी बात जारी रखी कि **मनुष्य का पुत्र** तो जाता ही है, जो क्रूस पर उसकी मृत्यु का हवाला है। **जैसा उसके विषय में लिखा है** इस बात पर ज़ोर देता है कि यीशु की मृत्यु पुराने नियम के धर्मशास्त्र का पूरा होना है (भजन संहिता 22:16; यशायाह 53:3–12)। चाहे परमेश्वर ने पहले से ठहराया हुआ था कि यीशु मरेगा परन्तु अपने कामों के लिए यहूदा फिर भी जिम्मेदार था (देखें प्रेरितों 2:23; 3:13–19; 13:27–29)। यहूदा के विश्वासघात में पाए जाने वाले दोष और दण्ड के कारण यीशु ने कहा कि **यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिए भला होता**।

आयत 25. यीशु को **रब्बी** (अर्थात "मेरे प्रभु अथवा स्वामी") कहते हुए यहूदा ने वही प्रश्न पूछा, जो दूसरे प्रेरितों ने पूछा था "**क्या वह मैं हूं?**" (देखें 26:22)। **यीशु ने उससे कहा, "तू कह चुका।"** यह "हां" कहने का एक प्रोक्ष ढंग था। बाद में यीशु ने महायाजक को भी ऐसे ही उत्तर दिया (26:64)।

इस दृश्य के अतिरिक्त विवरण यूहन्ना 13:23–30 में मिलते हैं। उनके झूके हुए होने और उससे यह पूछने के समय कि "हे रब्बी, क्या वह मैं हूं?" प्रिय चेला "यूहन्ना" यीशु की छाती की ओर झुका हुआ था। यीशु ने उत्तर दिया, "जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोकर दूंगा वही है।" उसी समय उसने टुकड़ा डुबोकर शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा को दिया। शैतान यहूदा में समा गया और यीशु ने अपने पकड़वाने वाले से कहा, "जो करता है तुरन्त कर।" किसी दूसरे प्रेरित को पता नहीं था कि यीशु उससे यह बात क्यों कह रहा है। उन्हें लगा कि यीशु यहूदा को पर्व के लिए कुछ समान खरीदने या निर्धनों को पैसा देने भेज रहा है। यहूदा रात के अंधेरे में चलते हुए तुरन्त वहां से चला गया।

प्रभु भोज की स्थापना (26:26-29)

26 उस ने उस से कहा, तू कह चुका: जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो, खाओ; यह मेरी देह है। 27 फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ। 28 क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है। 29 मैं तुम से कहता हूं कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य मे नया न पीऊं।

अपने चेलों के साथ फसह के भोज के दौरान यीशु ने एक यादगार स्थापना की जिसे उसके चेले आज के दिन तक प्रत्येक सप्ताह मनाते हैं। नये नियम में इसे ''रोटी तोड़ना'' (प्रेरितों 2:42; देखें 20:7, 11), ''सहभागिता'' (1 कुरिन्थियों 10:16; KJV), ''प्रभु की मेज़'' (1 कुरिन्थियों 10:21) और ''प्रभु भोज'' (1 कुरिन्थियों 11:20) कहा गया है। इस यादगार के साथ जुड़ा एक और नाम ''यूख्रिस्त'' है जो एक यूनानी शब्द का लिप्यंतरण है जिसका अर्थ है ''धन्यवाद देना'' (*eucharistia*)।[8] इससे जुड़ा क्रिया शब्द *eucharisteō* जिसका अनुवाद ''धन्यवाद हो'' होता है, यादगारी के संस्थान के चारों विवरणों में मिलता है (26:27; मरकुस 14:23; लूका 22:19; 1 कुरिन्थियों 11:24)।

आयत 26. यीशु ने एक परिवार के पिता की भूमिका निभाई जो परिवार के लोगों को फसह की घटनाओं के बारे में विस्तार से बताता था। इस अवसर पर उसने फसह के भोज में दो तत्वों को नया अर्थ दे दिया। पहले **यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, ''लो, खाओ; यह मेरी देह है।''** यह रोटी फसह की थी इस कारण यह अखमीरी थी (निर्गमन 12:8)। रोटी के लिए यहूदी आशीष इस प्रकार से होती थी: ''धन्य है तू, प्रभु हमारे परमेश्वर, संसार के राजा, जो भूमि में से रोटी निकालता है'' (14:19 पर टिप्पणियां देखें)।

उसके यह कहते हुए कि ''यह मेरी देह है,'' हमें याद रखना आवश्यक है कि वह उस समय देह में था, सो उसके कहने का अर्थ यह नहीं हो सकता था कि रोटी वास्तव में उसका शरीर बन गई। इसके बजाय रोटी उसकी देह को दर्शाती थी। उसने आगे कहा, ''यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए दी जाती है: मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' (लूका 22:19)। पौलुस ने बाद में कुरिन्थियों को यही बात याद दिलाई (1 कुरिन्थियों 11:24)।

आयत 27. फिर **फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, ''तुम सब इस में से पीओ।''** स्पष्टतया यीशु का जोर कटोरे के अन्दर पड़ी चीज़ पर था न कि कटोरे के ऊपर। ''कटोरा'' शब्द का इस्तेमाल एक शब्द का इस्तेमाल उसके बहुत नजदीकी से जुड़े शब्द का इस्तेमाल की जाने वाली साहित्यिक तकनीक लक्षणा का एक उदाहरण है।

पौलुस ने कहा कि यीशु ने ''बियारी के पीछे कटोरा भी लिया'' (1 कुरिन्थियों 11:25), इसका अर्थ सेवा के क्रम में तीसरे कटोरे से हो सकता है (26:20 पर टिप्पणियां देखें)। मेरविन आर. विल्सन ने लिखा है, ''रब्बियों की परम्परा में निर्गमन 6:6 में छुटकारे की चौथी में से तीसरी प्रतिज्ञा, 'मैं तुझे छुड़ाऊंगा' से जुड़े 'छुटकारे का कटोरा' के रूप में जाना जाता था।''[9] लूका ने लिखा कि यीशु ने रोटी से पहले और बाद में भी कटोरा लिया। परन्तु प्रभु ने विशेष अर्थ केवल बाद वाले को ही दिया (लूका 22:17–20)।[10] पौलुस ने इसे ''धन्यवाद का कटोरा'' कहा (1 कुरिन्थियों 10:16)।

आयत 28. फिर यीशु ने कटोरे का महत्व समझाया: ''**क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।**'' पुनः, यह उसका सचमुच का लहू नहीं था, क्योंकि वह अभी उनके साथ था और उसका लहू अभी तक ''बहाया'' नहीं गया था। कटोरा उसके लहू को नहीं दर्शाता था बल्कि कटोरे में पड़ी चीज़ उस लहू को दर्शाती थी, जो गुलगुथा में बहने वाला था।

कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ''वाचा'' शब्द से पहले ''नई'' जोड़ा गया है।[11] इस नई वाचा

की भविष्यवाणी इसकी स्थापना से कई सौ साल पहले यिर्मयाह भविष्यवक्ता द्वारा की गई थी (यिर्मयाह 31:31–34)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने यह ज़ोर देते हुए कि परमेश्वर ने मसीह के द्वारा एक नई और उत्तम वाचा बांधी है, यिर्मयाह में से उद्धृत किया (इब्रानियों 8:6–13)।

पुरानी वाचा की तरह ही नई वाचा के प्रभावी होने के लिए भी लहू (वाचा का लहू) आवश्यक था। इब्रानियों 9:15–22 विस्तार में इन दोनों के बारे में बताता है। मूसा ने जब इस्राएलियों को व्यवस्था दी और वे इसकी आज्ञा मानने को सहमत हो गए तो उसने बछड़ों का लहू लेकर वाचा की पुस्तक और लोगों पर छिड़काव किया (देखें निर्गमन 24:5–8)। लोगों को शुद्ध करने के लिए अपना स्वयं का लहू देकर यीशु नई वाचा के मध्यस्थ के रूप में आया। वसीयत और नियम की तरह उसके लिए मरना आवश्यक था ताकि नई वाचा प्रभावी हो पाती। इसके अलावा लोगों के पापों की क्षमा को सुरक्षित करने के लिए लहू का बहना आवश्यक था।

जब यीशु ने कहा कि उसका लहू ''बहुतों के लिए बहाया'' जाएगा तो वह यशायाह 53 की भाषा ही बोल रहा था। उस प्रसिद्ध भविष्यवाणी में दुखी दास ने ''अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया'' और ''बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया'' (यशायाह 53:12)। यीशु का बलिदान सारे संसार के पापों के प्रायश्चित के लिए था। यहां पर ''बहुतों'' का अर्थ ''सुसमाचार को ग्रहण करने वाले सब लोग'' है (20:28 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 29. यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया, ''**मैं तुम से कहता हूं कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं।**''[12] ''दाख का रस'' (*genēmatos tēs ampelou*) वाक्यांश जो मरकुस 14:25 और लूका 22:18 में भी मिलता है, यहूदियों द्वारा आम तौर पर इस्तेमाल किया जाता था। दाखरस पर उनकी कही जाने वाली विशेष प्रार्थना थी ''धन्य है तू, हे यहोवा, हमारे परमेश्वर, संसार के राजा, दाख के रस के बनाने वाले।''[13] शायद यीशु ने आयत 27 में कटोरे के लिए धन्यवाद देते समय ऐसे ही शब्दों का इस्तेमाल किया।

''दाख का रस'' वाक्यांश के अर्थ पर बहस हुई है। जैक पी. लूईस ने कहा है, '''दाख का रस' ... अपने आप में यह नहीं बताता कि यह मय थी या अंगूर का रस, परन्तु फलस्तीन में गर्मियों में अंगूर पके होते थे और वहां कोई फ्रिज नहीं होता था ... इस कारण यह असम्भव लगता है कि बसन्त ऋतु में [फसह के लिए] अंगूर का ताजा रस उपलब्ध हो।''[14]

परन्तु यहूदी लोग अपनी मय को पानी से पतला कर लेते थे। एक रब्बी के अनुसार, ''पानी में डालने से पहले मय पर आशीष नहीं बोली जाती थी।'' अन्य ज्ञानियों ने मान लिया कि आशीष पतला किए जाने से पहले दी जा सकती थी।[15] मिशनाह में फसह की सेवा के विवरण में संकेत मिलता है कि मय का हर कटोरा ''मिला हुआ'' होता था।[16] जो बिना शक पानी के साथ ही मिला होता था। टालमुड के अनुसार, फसह के मय में तीन भाग पानी और एक भाग मय का इस्तेमाल करते हुए इसे मिलाया जाता था।[17] आरम्भिक मसीही लोग पानी के साथ पतला कर देते थे। कई लेखक प्रभु भोज मनाने जाने के समय ऐसा करने का उल्लेख करते है।[18]

आयत 29 में ''दाख का रस'' पूरे भोज के लिए है। यह किसी एक भाग को पूरे के अर्थ में बताते हुए अलंकार का एक उदाहरण है। यीशु ने अपने चेलों को बताया कि उसने यह भोज तब तक नहीं मनाना था जब तक वह उनके साथ ''अपने पिता के राज्य में'' न ले लेता।

इस बात की व्याख्या दो प्रकार से हुई है। पहले, राज्य (कलीसिया) पिन्तेकुस्त के दिन संसार में आया (प्रेरितों 2)। इस कारण यीशु अपने चेलों को यह वचन दे रहा हो सकता है कि उनके इस यादगारी भोज में मनाने के समय उसने उनके साथ सहभागिता करनी थी। चाहे अदृश्य रूप में ही हो, प्रभु के दिन जब कलीसिया इकट्ठा होती है तो वह प्रभुभोज की मेज़बानी कर रहा होता है।

दूसरा, यीशु समय के अन्त में स्वर्गीय राज्य में मसीह के साथ चेलों की सहभागिता की बात कर रहा हो सकता है। कई आयतें मसीहा की दावत की बात करती लगती हो सकती हैं (8:11; लूका 13:29; 14:15; 22:16, 17, 29, 30; प्रकाशितवाक्य 19:9)। ''उस दिन'' समय के अन्त की ओर ध्यान दिलाती एक सामान्य अभिव्यक्ति है (24:36; लूका 21:34; 2 थिस्सलुनीकियों 1:10; 2 तीमुथियुस 1:18; 4:8)।

लुईस ने दोनों अर्थों की सम्भावना दी है, परन्तु बाद वाले अर्थ को अधिक प्राथमिकता दिखती है:

> परन्तु विद्वानों ने आम तौर पर स्वर्गीय दावत की ओर संकेत किया है और ज़ोर दिया है कि [यीशु की बात] अक्षरश: नहीं लिया जाना चाहिए ... परन्तु वास्तविक अर्थ में प्रभु सहभागिता के पर्व में अपने लोगों के साथ इकट्ठा होता है जिसमें वे ''जब तक वह न आए'' भाग लेते हैं (1 कुरिन्थियों 11:26)। उनकी सहभागिता आने वाली स्थिति से पहले की स्थिति है।[19]

यीशु ने जब प्रभु भोज की स्थापना की तो प्रेरितों के लिए यह समझ पाना कठिन था कि वह जो कह और कर रहा है उसका क्या महत्व है। जी उठने के बाद और यीशु के और निर्देश देने के बाद ही उन्हें समझ में आने लगा था (देखें लूका 24:44-47)। कलीसिया के आरम्भ होने पर आत्मा से भरे प्रेरितों ने यीशु में विश्वास लाने वालों और बपतिस्मा लेने वालों को प्रभु भोज का अर्थ समझाया होगा। यह नये मसीही हैं: ''और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और *रोटी तोड़ने में* और प्रार्थना करने में लौलीन रहे'' (प्रेरितों 2:42)। मत्ती के सुसमाचार का अपना विवरण लिखने तक प्रभु भोज पूरी तरह से स्थापित हो चुका था। उसके मूल पाठकों को इस यादगार के आरम्भ होने की रात प्रेरितों को इसकी समझ से अधिक समझ होगी।[20]

✧✧✧✧✧ **सबक** ✧✧✧✧✧

फसह (26:17-19)

फसह का आरम्भ उस रात का हुआ था जब परमेश्वर ने मिस्र में मनुष्य और पशुओं के पहलौठों पर मृत्यु का आदेश दिया था (निर्गमन 11:4, 5; 12:12, 13, 23-29)। परमेश्वर ने इस्राएलियों को वचन दिया था कि यदि वे उसके निर्देशों का पालन करते हैं तो उनमें से कोई भी नहीं मरेगा। उसने मूसा को लोगों से प्रत्येक घराने या परिवार के लिए एक, महीने के दसवें दिन बिना दोष के एक वर्ष के मेमने चुनने को कहा (निर्गमन 11:7)। हर परिवार को महीने के चौदवें दिन तक अपना मेमना रखना था और फिर उसे गोधूलि के समय आकर पूरी तरह से

आग में भूनना और मांस को उसी रात अखमीरी रोटी और कड़वे साग पात के साथ खाना था (निर्गमन 12:3-5)। यह दिन इस्राएल के इतिहास में यादगारी पल बन गया। उनका कैलेंडर तक इस यादगारी घटना को दर्शाने के लिए बदल गया। वह महीना जिसमें पहली बार फसह मनाया गया था उनके लिए साल का पहला महीना बन गया (निर्गमन 12:6, 8)। यह दिन इस्राएल के इतिहास का यादगारी दिन बन गया। इस यादगारी घटना को दर्शाने के लिए उनके कैलेंडर में बदलाव तक कर दिया गया। यह महीना जिसमें पहला फसह मनाया गया था उनके लिए वर्ष का पहला माह बन गया (निर्गमन 12:2) जिसे बाबुल के नाम निसान (ऐस्तर 3:7; नहेम्याह 2:1) के साथ साथ कनानी नाम अबीब (निर्गमन 13:4) से जाना जाता था।

इस्राएलियों द्वारा इस भोज के मनाने के ढंग के कठोर निर्देश दिए गए थे। पसकल का मेमना आग में पूरी तरह से भूजा होना आवश्यक था; इसे कच्चा या उबालकर नहीं खाया जाना था। उसी रात पूरा मेमना खत्म करना होता था या बचे हुए को आग में जला देना आवश्यक था (निर्गमन 12:9, 10)। प्रति घर एक मेमना होता था या दो छोटे परिवार एक मेमना आपस में बांट सकते थे (निर्गमन 12:4)। खाने में भाग लेने वाले सब लोगों के लिए पूरे कपड़े पहनने, पांव में जूती पहनने, सफर के लिए जाने को एकदम तैयार होकर भाग लेना आवश्यक था (निर्गमन 12:11)। पशु का लहू उस घर के अलंगों और चौखटों पर लगाना होता था, जिसमें वे खा रहे हों (निर्गमन 12:7)।

परमेश्वर ने इस घटना को ''फसह'' नाम दिया (निर्गमन 12:11), क्योंकि वह उन घरों के ऊपर से गुजर गया था जिनमें लहू पाया गया। मूसा ने इस्राएल के बुजुर्गों को इकट्ठा करके उन्हें परमेश्वर के निर्देश दे दिए। यह पीढ़ी दर पीढ़ी मनाया जाना था। प्रतिज्ञा किए हुए देश में उनके पहुंचने के बाद उन्हें इसे मनाना और अपने बच्चों को विस्तार से बताना जारी रखना था कि इसका अर्थ क्या है (निर्गमन 12:24-27)।

मसीही लोगों को फसह को मनाने की आज्ञा नहीं है। हमारे लिए इसका कोई अर्थ नहीं है। पौलुस ने लिखा है, ''पुराना खमीर निकाल कर, अपने आप को शुद्ध करो: कि नया गूंधा हुआ आटा बन जाओ; ताकि तुम अखमीरी हो, क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है'' (1 कुरिन्थियों 5:7)। पौलुस मसीह की मृत्यु को फसह में पसकल के मेमने के बलिदान से मिला रहा था। वह मेमना यहूदियों के लिए मिस्र की दासता से छूटने और परमेश्वर के लोगों के रूप में उनके गोद लिए जाने के जश्न को याद दिलाता रहता था। हमारे पापों के लिए मसीह के बलिदान के बारे में कुरिन्थुस के लोगों को लिखते हुए पौलुस ने सब मसीही लोगों को परमेश्वर द्वारा हमारे छुटकारे और अपने विशेष लोगों अर्थात हमारे प्रभु की कलीसिया के रूप में हमें गोद लेने को याद दिलाया। जिस प्रकार से इस्राएलियों को अपने जीवनों में किसी भी ऐसी बात को निकालना आवश्यक था जो उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश में उनके नये जीवन पर कलंक लगा सकती थी, वैसे ही मसीही लोगों के रूप में हमें भी अपने जीवनों में से पाप के किसी भी व्यवहार या कार्य को जो मसीह में हमारे नये जीवनों में रुकावट बनें, निकालना आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:1-11)।

यहूदा किस बात से चूका (26:20-25)

यहूदा फसह के भोज की समाप्ति से पहले ही झुण्ड से निकल गया (यूहन्ना 13:30) और वह कई सार्थक अनुभवों से चूक गया। वह प्रभु भोज की स्थापना के समय वहां नहीं था, जो पाप के लिए मसीह के अन्तिम बलिदान को याद दिलाता है (26:26-29)। उसने यूहन्ना 14:1-21 में दूसरे प्रेरितों से कही प्रभु की प्रोत्साहित करने वाली बातों को नहीं सुना। उसे प्रेरितों को शांति देने, उन्हें सिखाने और उसकी बातें याद दिलाने और सारी सच्चाई में उनकी अगुआई करने के लिए पवित्र आत्मा को भेजने की यीशु की प्रतिज्ञा का पता नहीं था (यूहन्ना 14:23-27; 15:26, 27; 16:13-15)। वह प्रभु द्वारा उसमें बने रहने के महत्व को दिखाते हुए दाख और टहनियों की शिक्षा देने के समय वहां नहीं था (यूहन्ना 15:1-17)। वह चेलों के लिए प्रभु की प्रार्थना से भी चूक गया जो विश्वासियों के बीच एकता की उसकी इच्छा को दिखाती है (यूहन्ना 17:1-26)।

प्रभु भोज को मनाना (26:26-29)

आज कई धार्मिक समूह प्रभु भोज को सप्ताह के अलग-अलग दिनों और विवाहों, जनाजों, जन्मों और बपतिस्मों जैसे विशेष अवसरों पर लेते हैं। ऐसा करने को समर्थन बाइबल में से नहीं मिलता। प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन को छोड़ किसी और अन्तराल और किसी और दिन प्रभु भोज को मनाने का वचन के अनुसार कोई अधिकार नहीं मिलता। आरम्भिक ऐतिहासिक विवरणों में प्रभु भोज के केवल रविवार के दिन लिए जाने की बात मिलती है।

लूका ने लिखा कि त्रोआस के मसीही लोग "सप्ताह के पहिले दिन ... रोटी तोड़ने के लिए" इकट्ठा होते थे (प्रेरितों 20:7)। कुरिन्थुस के मसीही भी ऐसा ही करते थे (1 कुरिन्थियों 11:20, 21, 33; 16:2)। आरम्भिक इतिहासकारों से हमें पता चलता है कि कई सदियों तक कलीसिया ऐसा ही करती रही।[21] मसीही लोगों को प्रभु भोज रविवार के दिन क्यों लेना चाहिए? रविवार जो कि सप्ताह का पहला दिन है, वही दिन है जिस दिन यीशु मुर्दों में से जी उठा था (28:1-7; लूका 24:1-7)।[22] किसी दिन के सम्बन्ध में जी उठने के बाद दिखाई देने की कोई भी बात रविवार के दिन ही हुई।[23] रविवार के दिन यीशु स्वर्ग पर ऊपर उठा लिया गया (प्रेरितों 1:3, 9)। उसी दिन संसार में कलीसिया का जन्म हुआ (प्रेरितों 2:1), क्योंकि पिन्तेकुस्त का दिन सप्ताह के पहले दिन ही मनाया जाता था (लैव्यव्यवस्था 23:15-21)। इस नाम से सप्ताह के किसी और दिन को बुलाने या प्रभु भोज किसी और दिन मनाने का कोई कारण ही नहीं है।

प्रभु भोज (26:26-29)

प्रभु भोज में पांच महत्वपूर्ण दृष्टिकोण पाए जाते हैं:

1. धन्यवाद के लिए ऊपर की ओर देखना (1 कुरिन्थियों 11:23-25);
2. यादगारी के लिए पीछे की ओर देखना (1 कुरिन्थियों 11:24, 25);
3. प्रचार के लिए बाहर की ओर देखना (1 कुरिन्थियों 11:26);
4. उम्मीद के लिए आगे की ओर देखना (1 कुरिन्थियों 11:26);

5. अपनी जांच के लिए अन्दर को देखना (1 कुरिन्थियों 11:27, 28)।

टिप्पणियां

[1]जोसेफस *वार्स* 6.9.3; देखें मिशनाह *पेसाहिम* 5.1. [2]मिशनाह *पेसाहिम* 5.5–10; 7.1, 2. [3]यूहन्ना 13 में भोज की व्याख्या फसह के भोज के रूप में ही की जानी चाहिए, जहां यीशु ने प्रभु भोज की स्थापना की (जैसा कि सुसमाचार के सहदर्शी विवरणों में मिलता है)। यूहन्ना 18:28 में यहूदी अगुओं के ''फसह को खाना'' की इच्छा पूरे भोज के लिए अर्थात फसह के लिए और उसके बाद के अखमीरी रोटी के दिनों के लिए हो सकती है। *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू जॉन*, पार्ट–2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1977), 42–44 में इस समस्या की फ्रैंक पैक की चर्चा देखें। यूहन्ना 19:14, 31, 42 में ''तैयारी का दिन'' शुक्रवार की ओर संकेत करता है जब यीशु की पेशी सब्त के पहले दिन (जो फसह के सप्ताह में आता था) पिलातुस के सामने हुई। [4]देखें मिशनाह *पेसाहिम* 10.1–9; जॉन लाइटफुट, *ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट फ्रॉम द टालमुड एंड हेब्रेका: मैथ्यू–1 कोरिंथियंस*, अंक 2, *मैथ्यू–मार्क* (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1859; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर, 1979), 346–49. [5]कड़वा साग पात मिस्र में इस्राएलियों के कड़वे अनुभवों को दर्शाता था। अखमीरी रोटी उन्हें उस फुर्ती का स्मरण दिलाती थी जिसमें परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से छुड़ाया था। (मिशनाह *पेसाहिम* 10.5.) [6]यह मन्दिर में बलिदान किया हुआ मेमना था। यह मूल फसह का स्मरण कराता था जिसमें इस्राएल के पहलौठों को छोड़ दिया गया था (वही)। [7]यूहन्ना 13:26 में ''टुकड़ा'' के लिए यूनानी शब्द (*psōmion*) का अर्थ मेमने का छोटा टुकड़ा भी हो सकता है परन्तु अधिक सम्भावना रोटी का छोटा टुकड़ा ही है (देखें NIV; NRSV; NJB; NEB; JNT)। यह भजन संहिता 41:9 में से यूहन्ना के उद्धरण के साथ मेल खाता है जहां उसने ''रोटी'' (*artos*) शब्द का इस्तेमाल किया (यूहन्ना 13:18)। [8]प्रभु भोजन के लिए ''यूखरिस्त'' शब्द का इस्तेमाल पहले दूसरी शताब्दी में किया गया। (इगनेशियस *फिलाडेल्फियंस* 4.1; *स्मिरनेइयंस* 6.2; 8.1; *डिडेक* 9.1, 5.)। [9]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया*, संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 3:678 में मारविन आर. विल्सन, ''पासओवर।'' [10]लूका 22:17–20 के आस पास के वचन से सम्बन्धित कठिनाइयों की चिंता के लिए देखें ब्रूस एम. मैत्जगर, *द टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट*, 2रा संस्क. (स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 148–50.

[11]वही, 54. लूका 22:20 में पाठन निर्विवाद है। [12]लूका ने इसे पहले कटोरे के साथ कहने (चाहे थोड़े से अन्तर से) जोड़ा (लूका 22:17, 18)। [13]मिशनाह *बेराकोथ* 6.1. [14]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू*, पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 147. [15]मिशनाह *बेराकोथ* 7.5. [16]मिशनाह *पेसाहिम* 10.2, 4, 7. [17]टालमुड *पेसाहिम* 108बी। [18]जस्टिन मार्टिर *अपोलोजी* 1.67; क्लेमेंट ऑफ़ एलेक्जेंडरिया *इंस्ट्रक्टर* 2.2; साइप्रियन *एपिस्टल्स* 62.2. [19]लुईस, 148. [20]रोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28*, वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 775.

[21]*डिडेक* 14.1; जस्टिन मार्टिर*अपोलोजी* 1.67; यूसबियुस *एक्लेसिएस्टिकल हिस्ट्री* 3.27. [22]कई आरम्भिक मसीही लेखक यीशु के जी उठने और प्रभु के दिन आराधना किए जाने के बीच सम्बन्ध पर ज़ोर देते हैं। (*बरनाबास* 15.8, 9; इगनेशियस *मैगनिशियंस* 9; जस्टिन मार्टिर*अपोलोजी* 1.67; यूसबियुस *एक्लेसिएस्टिकल हिस्ट्री* 3.27.) [23]डेविड एल. रोपर, *एक्टस 1–14*, ट्रुथ फ़ार टुडे कमैंट्री (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 2001), 25.